''बौद्ध दर्शनाचे विश्वविद्यापीठ नालंदा - एक अध्ययन''

(Nalanda : The University of Buddhist Ideoplgy – A Study)

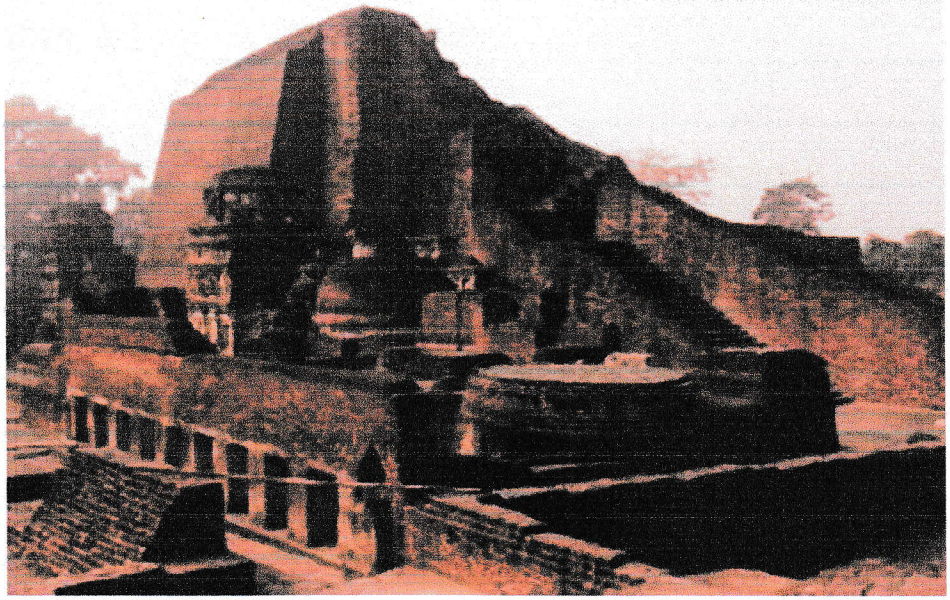

यू. जी. सी. द्वारा मान्यता प्राप्त
लघु शोध प्रबंध अहवाल

सादरकर्ती

प्रा. प्रतिभा बी. पखीडे

एम.ए. नेट पाली-प्राकृत

पाली-प्राकृत विभाग

पी.डब्ल्यू.एस. कला व वाणिज्य महाविद्यालय, नागपूर

२०१५

ACHIEVEMENTS FROM THE PROJECTS

नालंदा विश्वविद्यालय की बौद्ध शिक्षा पद्धति मुल्यवर्धित शिक्षा पद्धति होकर वह तत्कालीन समाज के सभी घटकों में समान रुप से पहुंचेंगी।

प्राचिन काल में बौद्ध विहार से ज्ञान का कार्य सुरु हुआ। इसी परम्परा का पालन नालंदा विश्वविद्यालय ने भी किया था।

शिक्षा के क्षेत्र में नालंदा विश्वविद्यालय जिस मुकाम पर पहुंचा, इसी कारण इस काल की गणना भारत के सर्वांगिण उन्नति के चरमोत्कर्ष के कालखंड के रुप में की जाती है।

नालंदा विश्वविद्यालय का पाठ्यक्रम तत्कालीन समाजजीवन की आवश्यकता को ध्यान में रखकर बनाया गया। जिसके फलस्वरुप भारत ने सभी क्षेत्रों में उन्नति की ।

आज विश्व जिस विश्वविद्यालय परम्परा का अनुकरण कर रहा है उसका श्रेय केवल नालंदा विश्वविद्यालय का है। ऐसा कहना ही युक्तिसंगत होगा।

बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के श्रेय केवल नालंदा विश्वविद्यालय को दिया जाना चाहिए। इसके फलस्वरुप बौद्ध धर्म की विश्वधर्म के रुप में पहचान प्राप्त हुई।

SUMMARY

NALANDA BUDDHIST IDEOLOGY A STUDY

अज्ञान नष्ट करके प्रज्ञा विकसित करना यह तथागत बुद्ध कि तत्वज्ञान के अनुसार बुद्ध ने लोगों के हितो के लिए तथा सुख के लिए मानवी कल्याणकारी धम्म की देशना दी।

प्राचिन काल में नालंदा, विक्रमशिला, तक्षशिला, उदन्तपुरी, वलभी यह विद्यालय विश्वविद्यालय के रुप से प्रसिद्ध थे। नालंदा विश्वविद्यालय ५ वी शताब्दि से १२ वी शताब्दि तक विश्व का प्रमुख ज्ञानकेन्द्र था।

बौद्ध संस्कृति के विकास में नालंदा विश्वविद्यालय का स्थान सर्वोच्च शिर्ष पर था। नालंदा विश्वविद्यालय सभी धर्म, पंथ, जाति, संप्रदाय की बंधनों को तोडकर केवल बुद्धिमत्ता और नैतिकता के आधार पर अपना सर्वांगिण विकास के धारणा करने वाले आदर्श गुरु शिष्य परम्परा को कायम रखा।

नालंदा विश्वविद्यालय के आदर्श उसके नैतिक मूल्य ही थे, इसीलिए सामाजिक, आर्थिक, राजकीय और सांस्कृतिक क्षेत्र में भारत का स्थान विश्व में आदरणीय और अद्वितीय था।

प्राचिन वैदिक शिक्षा यह उच्च वर्णीयों के लिए ही उपलब्ध थी, परन्तु उसमें बहुजन समाज का कोई स्थान नहीं था। लेकिन बौद्ध धर्म के उदय के साथ ही, तथागत बुद्ध ने चार्तुवर्ण व्यवस्था का खंडण करके, प्राचिन भारत में विहार और विद्यालय ज्ञान के लिए, सभी वर्ण, संप्रदाय, जाति तथा सभी सर्वसाधारण छात्राओं के लिए शिक्षा की प्रणाली खुली कर दी गयी।

नालंदा बौद्ध विश्वविद्यालय होने के बावजुद भी यहां का पाठ्यक्रम, धार्मिक और सामाजिक जीवन के साथ ही वेद, वेदांग हेतु विद्या, चिकित्सा विद्या, मंत्र विद्या, सांख्यिकीशास्त्र, अर्थव वेद इत्यादि विद्याओं को ज्ञान का मुख्य केन्द्र था।

नालंदा विद्यालय में चिन, कोरिया, तिबेट, श्रीलंका, मंगोलिया, ग्रीक देश से शिक्षा ग्रहण करने हेतु छात्र भारत में आते थे। नालंदा विश्वविद्यालय के कारण ही भारत आंतरराष्ट्रीय स्तर पर धार्मिकता, सहिष्णुता, एकता और बंधुता

का उदय होकर भारतीय संस्कृति का विकास अन्य देशों में भी हुआ।

बौद्ध भिक्षुओं ने बौद्ध धर्म के प्रचार और प्रसार के लिए कार्य किए। वही कार्य नालंदा विश्वविद्यालय ज्ञान के लिए किया। सभी, वर्ण, जाति, प्रांत, भाषा, देश और छात्राओं के प्रज्ञा,करूणा, शील, मैत्री, शान्ति, सहिष्णुता, एकता और बंधुता के लिए आकर्षित किया। उन्हें ज्ञान प्रदान करके विश्व नागरिक बनाने का कार्य नालंदा विश्वविद्यालय ने किया।

ह्यु-एन-त्संग इस चिनी मुसाफिर के अनुसार शाक्रादित्या कुमारगुप्त इसने विद्यालय की स्थापना की। नालंदा को प्राचिन काल से ही अनन्यसाधारण महत्त्व प्राप्त हो चुका था। तथागत बुद्ध ने वहां अनेक भिक्षओं को उपदेश किया था। यही से विद्यालय की छवीं और भी तेजस्वी और विश्व में प्रख्यात होने लगी थी। नालंदा का महत्व ज्ञान में लेते हुये, सम्राट अशोक ने यहां एक विहार की स्थापना की। वहां भिक्षुओं को उपदेश तथा ज्ञान दिया जाता था। तिबेट की तत्वज्ञान से यह प्रकट होता है की नालंदा यह भिक्षुओं को ज्ञान देने के लिए सम्राट अशोक द्वारा स्थापित किया गया। यह विश्व का पहिला विहार था। सुकुमार गुप्त के काल में इसका विकास और भी तेजी से हुआ और बाद में १३ वे शताब्दि में नालंदा विश्वविद्यालय का विकास होता रहा।

प्राचिन शिक्षा प्रणाली में एक ही अध्यापक पूरे विषयों को पढाया करते थे। यह अध्यापक सभी विषयों में परिपूर्ण होना बहुत मुश्किल था। इस वजह से छात्राओं ज्ञान की खामिया रह जाती थी। नालंदा विश्वविद्यालय यह उस समय एकमात्र ऐसा विद्यालय था जो हर विषय के लिए एक अध्यापक पूर्ण रूप से ज्ञानी तथा परिपूर्ण हो ऐसी व्यवस्था थी। नालंदा विश्वविद्यालय में १५०० अध्यापक गण थेद्य यहां रोज १०० विषयों पर मार्गदर्शन तथा व्याख्यानमालायें हुआ करती थी। छात्रायें यह व्याख्यान को सुनने के लिए समय निकालकर उपस्थित रहते थे। आधुनिक युग में वास्तदिक शिक्षा प्रणाली में हर दिषय के लिए एक अध्यापक होता, यह नालंदा विश्वविद्यालय की शिक्षा प्रणाली की देन है। जो बहुत ही आदर्शवादी शिक्षा प्रणाली है। शिक्षा के माध्यम से ही देश विकसनशील तथा नवनिर्माण की ओर बडी तेजी के साथ अग्रसर हो रहा है।

CONTRIBUTION TO THE SOCIETY

धर्म, जाति, प्रांत, प्रदेश के बंधन से मुक्त होकर विश्व के सभी लोगों को समान शिक्षा का अवसर उपलब्ध कराकर विश्व स्तर पर भारतीय संस्कृति के मूल्य स्थापित करने का कार्य नालंदा विश्वविद्यालय करेंगी।

भारत को पुर्नवैभव प्राप्त कराकर ज्ञान के क्षेत्र में दुनिया की तुलना में जागतिक विश्वविद्यालय के रूप में अपना नाम रोशन करेंगा।

प्राचिन इतिहास का पुर्नउत्थान करके नालंदा विश्वविद्यालय की तरह आधुनिक नालंदा विश्वविद्यालय का निर्माण करके भारत विश्व स्तर पर ज्ञानार्जन का विश्वप्रसिद्ध केन्द्र के रूप में गौरवान्वित होगा।

हजारो वर्षा से निरंतर चलनेवाली शिक्षा पद्धति में मुलत: परिवर्तन कर स्वतंत्रता, समता, बंधुता एवंम नैतिक मूल्य के आधार पर आदर्श एवं सुसंस्कृत समाज का निर्माण होगा।

भारत विश्व का गुरू है। अत: इस विद्यापीठ के निर्माण निर्माण से भारतीय संस्कृति के मुल्यों को पुर्नस्थापन करने का कार्य नालंदा विश्वविद्यालय करेंगी और इससे कोई संदेश नहीं है की भारत देश महासत्ता दिश में अपने कदम रखेगा।

Place : Nagpur
Date : 23/04/2015

Sign. of Principal
Investigator
P.B.Pakhide
Dept. of Pali & Prakruit

Sign.Principal
Officiating Principal
P.W.S. Arts & Commerce Colleg
Kamptee Road Nagpur-2